कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 06 सितम्बर, 2025

बागवानी और व्यावसायिक अवसर

जोनी [1*] और सरोज [2]

[1]बी.एससी., एल. आर. एस. कन्या महाविद्यालय, नगीना, उत्तर प्रदेश

[2]प्रधानाचार्या, रामा पब्लिक जू. हा. स्कूल, नगीना, बिजनौर

***E-mail: jaunithakur1212@gmail.com**

मानव जीवन में पेड़-पौधों का विशेष स्थान है। प्रकृति की हरियाली केवल पर्यावरण को संतुलित नहीं करती, बल्कि जीवन को भी आनंदमय बनाती है। इसी संदर्भ में बागवानी (Horticulture) का महत्व बढ़ जाता है। बागवानी केवल शौक़ या मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह आज के समय में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में भी उभर रही है। बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण बागवानी से जुड़े व्यावसायिक अवसर लगातार बढ़ रहे हैं।

बागवानी का विस्तार और वर्तमान परिदृश्य

भारत विश्व के उन देशों में शामिल है जहाँ कृषि और उससे जुड़े क्षेत्र आज भी मुख्य रोजगार का साधन हैं। राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के अनुसार भारत फल और सब्ज़ियों के उत्पादन में विश्व में दूसरा स्थान रखता है। शहरी क्षेत्रों में भी लोग घर की छत, बालकनी और आँगन में बागवानी कर रहे हैं। यह प्रवृत्ति बागवानी को केवल ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित नहीं रहने देती बल्कि शहरों में भी इसके अवसर बढ़ाती है।

बागवानी से होने वाले लाभ

1. **पर्यावरणीय लाभ:** बागवानी से हमारे आसपास का वातावरण स्वच्छ और संतुलित रहता है। पौधे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जिससे वायु शुद्ध होती है। इसके अलावा बागवानी प्रदूषण कम करने, मिट्टी की गुणवत्ता सुधारने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को संतुलित करने में मदद करती है। पेड़ों और पौधों से वातावरण में नमी बढ़ती है और गर्मी कम होती है।
2. **स्वास्थ्य लाभ:** घर या खेत में उगाए गए फल और सब्जियाँ ताज़ी और कीटनाशक रहित होती हैं, जो स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होती हैं। बागवानी करने से शारीरिक श्रम भी होता है, जिससे शरीर सक्रिय और तंदुरुस्त रहता है। नियमित पौधों की देखभाल से मानसिक तनाव कम होता है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।
3. **सामाजिक लाभ:** बागवानी न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामुदायिक स्तर पर भी लाभकारी है। जब लोग एक साथ बागवानी करते हैं तो उनमें सहयोग और आपसी समझ बढ़ती है। हरियाली से समाज में शांति और सौंदर्य का वातावरण बनता है। यह लोगों को प्रकृति से जोड़ने का माध्यम भी है।
4. **आर्थिक लाभ:** बागवानी से परिवार की सब्ज़ियों और फलों की ज़रूरतें पूरी हो सकती हैं, जिससे खर्च कम होता है। यदि बड़े पैमाने पर की जाए तो यह रोजगार और व्यवसाय का भी साधन बन सकती है। शहरी क्षेत्रों में टेरेस गार्डनिंग और ऑर्गेनिक सब्ज़ियों की बिक्री अतिरिक्त आय का स्रोत बन रही है।
5. **शैक्षिक लाभ:** बागवानी बच्चों और युवाओं के लिए शिक्षा का भी साधन है। पौधों की देखभाल से वे जीवन चक्र, धैर्य और जिम्मेदारी का महत्व सीखते हैं। स्कूलों में बागवानी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को प्रकृति से जोड़ने और पर्यावरण शिक्षा का व्यावहारिक रूप सिखाने का अवसर देती हैं।
6. **मानसिक एवं भावनात्मक लाभ:** पौधों के साथ समय बिताने से मन शांत होता है और तनाव कम होता है। यह ध्यान (Meditation) की तरह कार्य करती है और मानसिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होती है। हरे-भरे पौधे देखने से प्रसन्नता और संतोष की अनुभूति होती है।

इस प्रकार, बागवानी केवल मनोरंजन या शौक नहीं बल्कि पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य संवर्धन, सामाजिक एकता, आर्थिक अवसर और शिक्षा का एक सशक्त माध्यम है।

बागवानी और ग्रामीण/शहरी अर्थव्यवस्था

बागवानी ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का माध्यम है। किसान पारंपरिक खेती के साथ-साथ फूलों, फलदार वृक्षों और औषधीय पौधों की खेती कर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। शहरी क्षेत्रों में छतों और खाली स्थानों का उपयोग कर लोग जैविक सब्जियों और फलों की खेती कर रहे हैं। इससे न केवल आत्मनिर्भरता बढ़ती है बल्कि रोजगार के नए अवसर भी निर्मित होते हैं।

बागवानी से जुड़े व्यावसायिक अवसर

1. **नर्सरी व्यवसाय:** फूलों, फलों और सजावटी पौधों की नर्सरी में पौधे तैयार करना, कटिंग, गमले, ग्रोथ मीडिया और रोग-नियंत्रण जैसी गतिविधियाँ शामिल होती हैं।

कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 06 सितम्बर, 2025

- **लाभ**: भूमि और शेड नेट के साथ व्यवसाय शुरू किया जा सकता है। सजावटी पौधों की बढ़ती मांग इसे लाभकारी बनाती है।
- **चुनौतियाँ**: पौधों की गुणवत्ता बनाए रखना, पानी और रोग-कीट नियंत्रण।

2. फूलों की खेती: शादी, त्योहार, सजावट और होटलों के लिए फूलों की निरंतर मांग रहती है। गुलाब, ऑर्किड, लिलियम जैसे कट-फ्लावर्स तथा गमले में लगाने वाले पौधे लोकप्रिय हैं।

- **निवेश**: ग्रीनहाउस, जल प्रबंधन, उचित बीज और पैकेजिंग।
- **लाभ**: प्रति इकाई क्षेत्र पर अधिक उत्पादन और प्रीमियम कीमत।

3. फल एवं सब्ज़ी उत्पाद: घरेलू उपभोग और व्यावसायिक बिक्री दोनों के लिए यह प्रमुख व्यवसाय है। पॉलीहाउस, ड्रिप इरिगेशन और मल्टीक्रॉपिंग तकनीकों से उत्पादन और गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है

- **अवसर**: ताज़ा और स्थानीय उत्पादों की खपत लगातार बढ़ रही है।

4. औषधीय पौधों की खेती: तुलसी, एलोवेरा, अश्वगंधा, गिलोय आदि की मांग आयुर्वेद और औषधि उद्योग में हमेशा बनी रहती है।

- **लाभ**: उच्च मार्जिन और निर्यात संभावनाएँ।
- **चुनौतियाँ**: सर्टिफिकेशन और गुणवत्ता मानक।

5. जैविक खेती: रासायनिक मुक्त खेती की ओर उपभोक्ताओं का रुझान बढ़ रहा है।

- **लाभ**: पर्यावरणीय और स्वास्थ्य की दृष्टि से श्रेष्ठ।
- **अवसर**: विशेष बाजार, सुपरमार्केट और ऑनलाइन प्लेटफार्म।

6. सजावटी पौधे और गार्डन डेकोरेशन: घर, दफ्तर, होटल और मॉल में इनकी मांग तेजी से बढ़ रही है।

- **अवसर**: इनडोर पौधे, लैंडस्केपिंग और पौधों की देखभाल सेवाओं के साथ जुड़ाव।

7. ई-कॉमर्स प्लेटफार्म से जुड़ाव: अब किसान और उद्यमी सीधे उपभोक्ताओं तक अपने उत्पाद पहुँचा सकते हैं।

- **लाभ**: विस्तृत बाजार और बेहतर दाम।

चुनौतियाँ: पैकेजिंग, समय पर डिलीवरी और ताज़गी बनाए रखना।

तालिका 1: भारत में बागवानी उत्पादन (2022-23)

फसल प्रकार	उत्पादन (मिलियन टन)	योगदान (%)
फल	107	31.3
सब्ज़ियाँ	204	59.8
फूल	3.0	0.9
मसाले	11	3.2
औषधीय/सुगंधित पौधे	1.2	0.3
अन्य	15	4.5
कुल	**341**	**100**

स्रोत: राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, भारत 2023

तालिका 2: भारत में बागवानी एवं संबंधित व्यवसायों का सांख्यिकीय परिदृश्य (2023–24)

क्षेत्र / संकेतक	आँकड़े (2023–24)
फ्लोरिकल्चर का क्षेत्रफल	2.83 लाख हेक्टेयर
फूलों का निर्यात (2022–23)	21,024 मीट्रिक टन (रु.707.81 करोड़)
भारतीय फ्लोरिकल्चर बाजार का आकार (2024)	रु. 29,200 करोड़ (अनुमान: 2033 तक रु.74,400 करोड़)
ऑर्गेनिक खेती का क्षेत्रफल	1.76 मिलियन हेक्टेयर
ऑर्गेनिक खाद्य उद्योग का मूल्य (2023)	रु. 131.41 अरब (अनुमान: 2028 तक रु. 625.69 अरब)
प्रमाणित जैविक उत्पादों का निर्यात (2023)	0.312 मिलियन मीट्रिक टन (USD 708 मिलियन)
ऑनलाइन नर्सरी बाजार (2024)	USD 386.5 मिलियन (अनुमान: 2030 तक तीव्र वृद्धि)

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 06 सितम्बर, 2025

समाधान

बागवानी के क्षेत्र में भूमि की कमी, निवेश की आवश्यकता, विपणन तंत्र की जटिलता और आधुनिक तकनीक की जानकारी की कमी जैसी चुनौतियाँ सामने आती हैं। इनसे निपटने के लिए सरकारी योजनाएँ, सहकारी समितियाँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध कराए जा रहे हैं। आधुनिक तकनीक जैसे ड्रिप इरीगेशन, हाइड्रोपोनिक्स और वर्टिकल गार्डनिंग से इन समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है।

निष्कर्ष

बागवानी न केवल पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य संवर्धन का माध्यम है बल्कि यह आर्थिक आत्मनिर्भरता और व्यावसायिक विकास का भी सशक्त साधन है। यदि इसे सही दिशा और प्रौद्योगिकी के साथ अपनाया जाए तो यह ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के लिए आजीविका और सतत विकास का मजबूत आधार बन सकती है। आने वाले समय में बागवानी व्यवसाय रोजगार और आय वृद्धि का एक प्रभावी क्षेत्र बनकर उभरेगा।

●●●